आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-25, अंक-10 अक्टूबर 2011

इस अंक में

- खाद्य पदार्थों में प्रोबायोटिक्स के मूल्यांकन हेतु आई सी एम आर - डी बी टी दिशानिर्देश 73
- हिन्दी दिवस संगोष्ठी 76
- राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान का संस्थापना दिवस समारोह 77
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के पुरस्कार 78
- परिषद के समाचार 82
- परिषद की वित्तीय सहायता से संपन्न एवं भावी संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन 83

संपादक मंडल

अध्यक्ष — डॉ विश्व मोहन कटोच
महानिदेशक
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद
एवं सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग

सदस्य — डॉ के. सत्यनारायण
डॉ बेला शाह

संपादक — डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय
डॉ रजनी कान्त

प्रकाशक — श्री जगदीश नारायण माथुर

आई सी एम आर शताब्दी वर्ष पर विशेष

खाद्य पदार्थों में प्रोबायोटिक्स के मूल्यांकन हेतु आई सी एम आर - डी बी टी दिशानिर्देश

विगत दशक के दौरान भारतीय बाज़ार में प्रोबायोटिक उत्पादों की बाढ़ आई है । परन्तु, खाद्य पदार्थों में प्रोबायोटिक्स की मौजूदगी ज्ञात करने की कोई सुव्यवस्थित विधि नहीं है जिससे उनकी सुरक्षा और प्रभावकारिता सुनिश्चित की जा सके । इसे ध्यान में रखते हुए देश में प्रोबायोटिक उत्पादों के नियमन हेतु भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) और जैवप्रौद्योगिकी विभाग (डी बी टी) द्वारा संयुक्त रूप से गाइडलाइंस (दिशानिर्देश) तैयार करने की पहल की गई ।

क्या है प्रोबायोटिक्स

प्रोबायोटिक्स मानव स्वास्थ्य पर एक लाभकारी प्रभाव डालने वाले सजीव सूक्ष्मजीव (माइक्रोऑर्गेनिज़्म्स) होते हैं । प्रोबायोटिक्स की संकल्पना 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में की गई थी, परन्तु हाल के दिनों में कार्यात्मक खाद्य बाज़ार में इसकी लोकप्रियता काफी बढ़ी है । भारत खाद्य पदार्थों में प्रोबायोटिक्स के लिए एक संभावित बाज़ार के रूप में तेजी से उभर रहा है । भारतीय बाज़ारों में इसके आपूर्तिकर्ताओं में नेस्ले, मदर डेयरी, डैनिस्को, चर हैंसेन, याकुल्ट और डैनोन, आदि कम्पनियों के नाम प्रमुख हैं । ताजा बाज़ार शोध रिपोर्ट **'प्रोबायोटिक्स मार्केट (2009-2014)'** के अनुसार वर्ष 2008 में विश्व स्तर पर लगभग 16 बिलियन अमरीकी डॉलर मूल्य के प्रोबायोटिक्स का व्यापार हुआ और वर्ष 2014 तक इसका व्यापार बढ़कर लगभग 32 बिलियन अमरीकी डॉलर तक पहुंच जाने की संभावना है । जिसकी वर्ष 2009 से 2014 के दौरान सालाना लगभग 12.6 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई है । भारत में प्रोबायोटिक उत्पाद उद्योग का व्यापार 20.6 मिलियन रुपए आंका गया है जिसकी वर्ष 2015 तक 22.6 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान है ।

भारत में प्रोबायोटिक खाद्य पदार्थों के नियमन के लिए कोई दिशानिर्देश नहीं हैं । इसलिए सदैव भारतीय बाज़ारों में झूठे दावों के साथ हानिकारक और अप्रभावी उत्पादों की उपस्थिति की संभावना होगी । अतः, इन उत्पादों को मानकीकृत करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है, जिससे उन्हें 'प्रोबायोटिक उत्पाद' का लेबल लगाने से पहले उनको कुछ अनिवार्य स्थितियों के अनुकूल बनाया जा सके ।

इसे ध्यान में रखते हुए आई सी एम आर ने विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को सम्मिलित करते हुए एक टास्क फोर्स का गठन किया जिसका उद्देश्य भारत में प्रोबायोटिक्स का मूल्यांकन करने के लिए दिशानिर्देश (गाइडलाइंस) का ड्राफ्ट तैयार करना था । इस टास्क फोर्स में विश्व के

विभिन्न भागों में मौजूद गाइडलाइंस पर भी विचार किया गया । एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया के उपरान्त वैज्ञानिक उद्देश्यों के लिए प्रोबायोटिक्स खाद्यों का मूल्यांकन करने के लिए निम्न गाइडलांइस (दिशानिर्देश) को ड्राफ्ट किया गया है । इसके बाद से यह गाइडलाइंस ''आई सी एम आर-डी बी टी गाइडलांइस'' के नाम से ज्ञात होगी ।

खाद्य पदार्थों में प्रोबायोटिक्स के मूल्यांकन हेतु आई सी एम आर - डी बी टी गाइडलाइंस प्रायोजन (स्कोप)

इस गाइडलाइंस में खाद्य पदार्थों में प्रोबायोटिक्स के प्रयोग से संबंधित पहलुओं को सम्मिलित किया गया है और प्रोबायोटिक उपभेद (स्ट्रेन) की सुरक्षा और प्रभावकारिता के मूल्यांकन की आवश्यकता तथा प्रोबायोटिक्स युक्त खाद्य उत्पादों की लेबलिंग और स्वास्थ्य के प्रति दावों से संबंधित जानकारी प्रदान की गई है ।

नोट : ये दिशानिर्देश (गाइडलाइंस) उन प्रोबायोटिक्स के लिए मान्य नहीं हैं जो औषधियों, खाद्यों में अप्रयुक्त लाभकारी माइक्रोऑर्गेनेज़म्स अथवा आनुवंशिक रूप से रूपांतरित माइक्रोऑर्गेनिज़म्स के अंतर्गत पारिभाषित किए गए हों ।

प्रोबायोटिक्स की परिभाषा

प्रोबायोटिक्स वे सजीव सूक्ष्मजीव (माइक्रोऑर्गेनिज्म) होते हैं जो पर्याप्त मात्रा में उपयोग करने की स्थिति में परपोषी (होस्ट) के स्वास्थ्य पर लाभकारी प्रभाव डालते हैं (खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ ए ओ)/विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू एच ओ), 2002) ।

जीनस, स्पीसीज़ और उपभेद (स्ट्रेन) की पहचान

प्रोयोबायोटिक का प्रभाव उपभेद पर निर्भर करता है । विशिष्ट स्वास्थ्य प्रभाव के साथ किसी उपभेद को जोड़ना तथा रोग की निगरानी एवं जानपदिक रोगविज्ञान से संबद्ध सटीक अध्ययनों के लिए उपभेद की पहचान करना महत्वपूर्ण है । फीनोटिपिक और जीनोटिपिक दोनों प्रकार के परीक्षण वैधीकृत मानक विधियों के प्रयोग के साथ किए जाने चाहिए । बैक्टीरिया (जीवाणु) का नामकरण *इंटरनेशनल कमीटी ऑन सिस्टेमैटिक्स ऑफ प्रोकैरियोट्स* (आई सी पी एस) द्वारा निर्धारित वर्तमान, वैज्ञानिक रूप से मान्यता प्राप्त नामों के अनुरूप होना चाहिए । चित्र में संभावित प्रोबायोटिक उपभेदों के मूल्यांकन हेतु विभिन्न चरणों को प्रदर्शित किया गया है ।

उपभेदों की पहचान वर्तमान में प्रयुक्त आण्विक तकनीकों में पी सी आर आधारित तकनीकें, 16S rRNA सीक्वेंसिंग और राइबोटाइपिंग और पल्स्ड फील्ड जेल इलेक्ट्रोफोरेसिस (PFGE) जैसी डी एन ए फिंगर प्रिंटिंग तकनीकें सम्मिलित हैं ।

सिफ़ारिश की गई है कि भारत में प्रयुक्त प्रोबायोटिक स्ट्रेंस (उपभेदों) को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त किसी कल्चर संग्रहण/भण्डार में जमा किया जाना चाहिए ।

संभावित प्रोबायोटिक स्ट्रेंस के मूल्यांकन हेतु गाइडलाइंस

संभावित प्रोबायोटिक स्ट्रेंस की जांच हेतु *इन विट्रो* परीक्षण : अनुमानित

प्रोबायोटिक उपभेदों की जांच के लिए मानक विधियों के साथ निम्नलिखित *इन विट्रो* परीक्षणों की सिफारिश की जाती है :

(i) जठर अम्लता (गैस्ट्रिक एसिडिटी) के प्रति प्रतिरोधक क्षमता,

(ii) पित्त अम्ल के प्रति प्रतिरोधकक्षमता,

(iii) संभावित रोगजनक जीवाणु (बैक्टीरिया) के विरुद्ध सूक्ष्मजीवीरोधी (एंटीमाइक्रोबियल) क्रियाशीलता (अम्ल और बैक्टीरियोसिन का उत्पादन),

(iv) सतह के साथ रोगजनक के आसंजन (एधेसन) को घटाने की क्षमता, और

(v) बाइल सॉल्ट हाइड्रोलेज़ क्रियाशीलता

ये सभी परीक्षण आंत के प्रतिकूल परिवेश पर आधारित होते हैं जो *इन विट्रो* स्थितियों में इनका अनुकरण करते हैं । इन परीक्षणों के आधार पर प्रोबायोटिक्स के रूप में मूल्यांकन किए गए संवर्धों की मानव सबजेक्ट्स में

क्लीनिकल परीक्षण करने से पूर्व उपयुक्त जन्तु मॉडेलों में पूर्व चिकित्सीय वैधता ज्ञात की जानी चाहिए ।

जन्तु मॉडेलों में *इन वीवो* सुरक्षा अध्ययन

सभी संभावित उपभेदों के लिए अत्यधिक मात्रा में प्रोबायोटिक्स के सेवन के उपरांत तीव्र (एक्यूट), सबएक्यूट और चिरकारी (क्रॉनिक) विषाक्तता का मूल्यांकन किया जाना चाहिए । यह मूल्यांकन उन उपभेदों के लिए आवश्यक नहीं हो सकता जो प्रमाणित प्रयोग के साथ संबद्ध हों ।

जन्तु मॉडेलों में *इन वीवो* प्रभावकारिता अध्ययन

इन वीट्रो प्रभावों को प्रमाणित करने के लिए मानव पर परीक्षणों से पूर्व उपयुक्त, प्रमाणित जन्तु मॉडेलों पर परीक्षण किए जाने चाहिए ।

मानव प्रयोग हेतु प्रोबायोटिक्स की सुरक्षा का मूल्यांकन

सुनिश्चित सुरक्षा के महत्व को देखते हुए, यहां तक कि सामान्यतया सुरक्षित वर्ग के अन्तर्गत आने वाले जीवाणुओं के लिए भी, प्रोबायोटिक्स उपभेदों की निम्नलिखित परीक्षणों के साथ न्यूनतम की श्रेणी में निर्धारित किया जाना चाहिए :

(i) एंटीबायोटिक के प्रति प्रतिरोध के स्वरूप का निर्धारण । यह ज्ञात किया जाना चाहिए कि प्रयुक्त किसी भी प्रोबायोटिक उपभेद को परिवर्तनशील एंटीबायोटिक प्रतिरोध के संबंध में पर्याप्त खतरा नहीं है,

(ii) अवांछित इतर-प्रभावों का मूल्यांकन,

(iii) यदि मूल्यांकन किया जाने वाला कोई उपभेद ऐसी स्पीसीज़ के अन्तर्गत आता हो जो स्तनपायी प्राणियों में टॉक्सिन (विष) उत्पादन के रूप में ज्ञात हो अथवा उसमें हीमोलाइटिक संभाव्यता पाई जाती हो तो उसका टॉक्सिन उत्पादन और हीमोलाइटिक (रक्तसंलायी) क्रियाशीलता के रूप में परीक्षण किया जाना अनिवार्य है ।

प्रतिरक्षा संदमित व्यक्तियों में किसी प्रोबायोटिक उपभेद द्वारा संक्रामकता की कमी को ज्ञात करना एक अतिरिक्त मूल्यांकन होगा ।

मानवों में प्रभावकारिता अध्ययनों का मूल्यांकन

प्रोबायोटिक्स की प्रभावकारिता पर संपन्न अध्ययनों से प्राप्त मुख्य परिणामों को मानव परीक्षणों में समान लाभों के साथ प्रमाणित किया जाना चाहिए । इन परिणामों में सांख्यिकीय और चिकित्सीय जांच के परिणामस्वरूप स्थिति, लक्षणों, संकेतों, जीवन की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण सुधार आने, रोग ग्रस्त होने के खतरे में गिरावट आने, दूसरी बार एक लम्बे अंतराल के पश्चात प्रभावित होने अथवा रोग की स्थिति में तेजी से रोगमुक्त होने जैसी स्थितियां सम्मिलित होती हैं । प्रत्येक पैरामीटर और परीक्षण किए गए प्रोबायोटिक्स के बीच प्रमाणित सहसंबंध होना चाहिए ।

जब तक किसी प्रोबायोटिकयुक्त खाद्य पदार्थ के सेवन के साथ स्वास्थ्य संबंधी कोई, विशेष दावा न किया गया हो, उसकी प्रभावकारिता के संबंध में तृतीय प्रावस्था का अध्ययन नहीं किया जाना चाहिए । क्योंकि विशेष दावों की स्थिति में अपेक्षित प्रमाण एकत्र करना अनिवार्य होता है जिसके लिए तृतीय प्रावस्था के अध्ययनों की अनिवार्यता हो जाती है ।

यदि किसी प्रोबायोटिकयुक्त खाद्य को लम्बी अवधि तथा सुरक्षित प्रयोग किए जाने से संबंधित प्रमाणों का उल्लेख (रिकॉर्ड) किसी बाहरी देश से मिलता हैं, उस स्थिति में संबंधित आंकड़ों की समीक्षा के उपरांत ही अपने देश के बाज़ार में उपलब्ध कराने की मंजूरी दी जानी चाहिए । हालांकि, उत्पाद की लेबलिंग पर स्वास्थ्य पर पड़ने वाले लाभकारी प्रभावों का मूल्यांकन अलग तरीके से करने की आवश्यकता होती है । विदेशों में संपन्न अध्ययनों के परिणामस्वरूप प्रदर्शित स्वास्थ्य के लाभकारी प्रभावों को भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रमाणित करने की आवश्यकता है जिसके लिए उन प्रोबायोटिक उत्पादों के साथ भारतीय सबजेक्ट्स पर भी अध्ययन किए जाने चाहिए । यह सिफ़ारिश की जाती है कि भारतीय सबजेक्ट्स पर किए जाने वाले ऐसे मानव परीक्षणों में औषध नियामक अथॉरिटी द्वारा निर्धारित सिद्धान्तों का अनुपालन होना चाहिए । यदि किसी प्रकार के प्रतिकूल प्रभाव प्रकाश में आते हैं तो उपयुक्त अधिकारियों को उनसे अवगत कराया जाना चाहिए ।

प्रोबायोटिक उपभेद/उपभेदों की प्रभावी खुराक

जिस खाद्य पदार्थ में प्रोबायोटिक मिलाया जाना है उसमें cfu/मि.ली./प्रतिदिन के संदर्भ में प्रोबायोटिक उपभेद (स्ट्रेन) की लाभकारी न्यूनतम प्रभावी मात्रा अथवा जीवनक्षम कोशिकाओं के स्तर का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाना चाहिए ।

लेबलिंग की आवश्यकता

लेबलिंग के लिए खाद्य कानूनों के अन्तर्गत सामान्य जरूरतों के अलावा लेबेल पर निम्नलिखित सूचनाएं भी दी जानी चाहिए :

(i) मानक अंतर्राष्ट्रीय नामकरण के अनुरूप जीनस, स्पीसीज़ और उपभेद का स्पष्ट वर्णन,

(ii) जिस स्तर पर प्रभावकारिता का दावा किया जा रहा हो और शेल्फ-लाइफ (उपयोग हेतु सुरक्षित रहने की अवधि) के अंत में प्रत्येक प्रोबायोटिक उपभेद की न्यूनतम जीवनक्षम संख्या,

(iii) स्वास्थ्य संबंधी दावों का प्रमाण-आधारित स्पष्ट वर्णन,

(iv) स्वास्थ्य दावों के संबंध में प्रोबायोटिक खाद्य पदार्थ का सेवन कितनी मात्रा में किया जाए जिससे प्रोबायोटिक की न्यूनतम प्रभावी मात्रा मिल सके, इसका स्पष्ट वर्णन, और

(v) भण्डारण की उपयुक्त स्थितियों का वर्णन ।

निर्माण एवं रख-रखाव संबंधी विधियां

गुणवत्ता आश्वासन के पर्याप्त कार्यक्रमों का अनुपालन होना चाहिए । प्रोबायोटिक खाद्यों के निर्माण में उत्तम विधियां अपनाई जानी चाहिए । *हेज़ार्ड एनालिसिस ऐण्ड क्रिटिकल कंट्रोल प्वाइंट* (HACCP) के प्रयोग के लिए दिशानिर्देशों और खाद्य स्वच्छता के सामान्य कोडेक्स सिद्धान्तों/नियमों का अनुपालन किया जाना चाहिए ।

इस प्रकार देश में प्रोबायोटिक उत्पादों के नियमन हेतु भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) और जैवप्रौद्योगिकी विभाग (डी बी टी) द्वारा की गई पहल के परिणामस्वरूप प्रस्तुत दिशानिर्देश से सुरक्षा के संबंध में उपभोक्ताओं को काफी सहायता मिलेगी ।

यह लेख *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च* के जुलाई, 2011 अंक में *''पॉलिसी डॉक्यूमेंट : आई सी एम आर - डी बी टी गाइडलांइस फॉर इवैल्युएशन ऑफ प्रोबायोटिक्स इन फूड''* शीर्षक से प्रकाशित लेख पर आधारित है ।

प्रस्तुति : डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय, वैज्ञानिक 'ई' आई सी एम आर मुख्यालय, नई दिल्ली ।

हिन्दी दिवस संगोष्ठी

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय के प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग के हिन्दी प्रकाशन एकक द्वारा दिनांक 21 सितम्बर, 2011 को परिषद मुख्यालय में ''जीवन शैली से संबद्ध रोगों का चिकित्सा प्रबंध - एक अपडेट (Management of lifestyle diseases - An update)'' शीर्षक से संगोष्ठी का आयोजन किया गया। नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के कॉर्डियोलॉजी विभाग के अतिरिक्त आचार्य डॉ राकेश यादव; सर गंगा राम अस्पताल के विज़िटिंग परामर्शदाता डॉ ए.के. झिंगन; तथा हमदर्द विश्वविद्यालय के डीन/प्रिंसिपल डॉ श्रीधर द्विवेदी इस संगोष्ठी में प्रमुख वक्ता के रूप में उपस्थित थे।

प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग के वैज्ञानिक 'ई' डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय के स्वागत भाषण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग के प्रमुख डॉ के.सत्यनारायण ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित इस संगोष्ठी के औचित्य के साथ-साथ इसके महत्व के विषय में जानकारी प्रदान की ।

सर्वप्रथम डॉ राकेश यादव ने 'जीवन-शैली और हृदयरोग' विषय से संबंधित ज्ञानवर्धक जानकारी बड़ी ही सहजता एवं रोचक ढंग से देते हुए कहा कि - लगभग 30 वर्षों में हमारी जीवन शैली में बदलाव के कारण हमारे स्वास्थ्य में भी महत्वपूर्ण बदलाव आ रहा है जिसका प्रभाव मानसिक रोग, ब्लड प्रेशर, डायबिटीज़, किडनी व हड्डियों के रोग, धमनियों में बदलाव एवं हृदयरोग आदि के रूप में देखा जा सकता है। उन्होंने बताया कि नशा करना भी हमारी बदलती जीवन शैली का हिस्सा बन चुका है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए घातक है। उन्होंने इंटरनल एसी को भी संक्रामक बीमारियों का वाहक बताया, संक्रमण फैलाने वाला वायरस ठंड में तेजी से फैलता है, तथा 26 डिग्री का तापमान भी वायरस फैलाने के लिए पर्याप्त होता है। भागदौड़ भरी जिंदगी में जंक फूड पर अधिक निर्भरता भी हमें बीमार बना रही है। भारत में दिल की बीमारी काफी हद तक बढ़ रही है । यह रोग धीरे-धीरे हमें प्रभावित करता रहता है और जब हम इस रोग से 80 प्रतिशत प्रभावित हो जाते हैं यानि हम रोग की आखिरी सीढ़ी पर होते हैं तब इसके लक्षण समक्ष आते हैं। डॉ यादव ने खाने में नमक, अचार, दालमोठ कम मात्रा में लेने एवं स्वस्थ रहने के लिए 'लो फैट डाइट' रेशेदार फल, दैनिक व्यायाम पर अत्यधिक ज़ोर दिया जो हमारे स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक है।

डॉ झिंगन ने 'जीवन शैली में बदलाव और मधुमेह' विषय पर बोलते हुए कहा कि 50 वर्षों में हुए रेपिड चेंज (त्वरित परिवर्तन) व आर्थिक वृद्धि ने जीवन को आराम परस्त बना दिया है। फास्ट फूड के कल्चर के कारण भारत मधुमेह की राजधानी बनता जा रहा है। भारत सहित पूरा दक्षिण एशिया मधुमेह से प्रभावित है। भारतीयों के जीन में मधुमेह फास्ट फूड के कारण तेजी से फैल रहा है और 70 प्रतिशत लोग ओवर वेट हो रहे हैं। अमेरिका में जो बदलाव 200 वर्षों में हुआ, वह भारत में मधुमेह के कारण मात्र 30 वर्षों में देखने को मिला है। डॉ झिंगन ने डायबिटीज़ को साइलेंट किलर बताते हुए कहा कि मधुमेह के कारण अन्धता, किडनी प्रभावित होना,तथा अन्य अंगों की सम्बद्धता भी शामिल हो जाती है । उन्होंने मधुमेह से बचाव के लिए शारीरिक सक्रियता और भोजन में दलिया, रेशेदार फल लेना एवं व्यायाम पर अत्यधिक ज़ोर दिया।

इस संगोष्ठी में अन्तिम वक्ता के रूप में डॉ श्रीधर द्विवेदी ने 'जीवन शैली और वयोवृद्धि' से संबद्ध विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारतीय दर्शन हमें बेहतर जीवनशैली अपनाने की राह दिखाता है, किन्तु बदलती जीवन शैली के कारण हम इससे काफी दूर होते जा रहे हैं। भागदौड़ भरी जीवन शैली व गलत खानपान के कारण हम बीमारियों से घिरते जा रहे हैं। पाउच संस्कृति यानि आराम तलब जीवन शैली एवं तम्बाकू से हम बुढ़ापे (वयोवृद्धि) की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं तथा धूम्रपान एवं तम्बाकू का सेवन भारत में मुख के कैंसर का प्रमुख कारण बन रहा है। गलत जीवन शैली हमारी अंतःस्रावी ग्रंथियों पर दुष्प्रभाव डाल रही है। भारत में कुछ स्थानों पर 103 वर्ष तक सामान्य जीवन जी रहे लोगों का उदाहरण देते हुए डॉ द्विवेदी ने कहा कि स्वयं अनुशासित रहकर, जीवन में अध्यात्मिकता को अपना, तम्बाकू का त्यागकर, तनाव से मुक्ति व खुद में वैचारिक बदलाव लाकर हम स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। खान-पान में मेथी, जीरा, सौंफ, राई, काला जीरा, तुलसी, आंवला आदि का प्रयोग तथा ध्यान, योग, सात्विक आहार आदि हमारी जीवन शैली को सुधार कर हमें स्वस्थ बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि हमें स्वस्थ रहने के लिए नियमित व्यायाम को भी दिनचर्या में शामिल करना चाहिए। 24 घंटे में से 1 घंटा हमें अपने लिए प्रतिदिन निकालना चाहिए। डॉ द्विवेदी ने अपने व्याख्यान में गीता के श्लोकों, डायाग्राम व चित्रों के प्रयोग तथा बड़ी ही सरलता एवं सहजता से सुसंस्कृत शुद्ध हिन्दी में उपस्थित लोगों को महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

हिन्दी-दिवस संगोष्ठी का एक दृश्य

व्याख्यान के पश्चात उपस्थित वैज्ञानिकों एवं श्रोताओं ने अनेक प्रश्न पूछे जिनका माननीय वक्ताओं द्वारा सहजता से रोचक उत्तर दिया गया।

स्वास्थ्य संबंधी इस विशेष संगोष्ठी को नई दिल्ली से प्रकाशित हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण एवं नई दुनिया जैसे हिन्दी समाचार पत्रों ने अपने विशेष कॉलम में स्थान दिया तथा डॉ राकेश यादव, डॉ श्रीधर द्विवेदी एवं डॉ झिंगन के इंटरव्यू के साथ प्रकाशित किया।

आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच ने किसी कारणवश संगोष्ठी में उपस्थित न हो सकने के कारण अपना शुभकामना संदेश भेजा। प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग के प्रमुख डॉ के. सत्यनारायण के मार्गदर्शन में परिषद के वैज्ञानिकों के लिए आयोजित इस संगोष्ठी में वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों के अतिरिक्त अनेक मीडिया कर्मी व 100 से अधिक श्रोताओं की उपस्थिति थी। प्रभाग के वैज्ञानिक 'डी' डॉ रजनी कांत के धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान का संस्थापना दिवस समारोह

दिनांक 28 सितम्बर, 2011 को नई दिल्ली स्थित इंडिया हैबिटेट सेंटर में राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान का संस्थापना दिवस मनाया गया । सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, डॉ विश्व मोहन कटोच की अध्यक्षता में संपन्न इस समारोह में वाराणसी स्थित आयुर्विज्ञान संस्थान, बी एच यू के कम्युनिटी मेडिसिन विभाग के पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष प्रो.डी.सी.एस. रेड्डी विशेष अतिथि तथा आंध्र प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव एवं हैदराबाद स्थित निज़ाम इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ के निदेशक एवं कुलपति डॉ प्रशान्त महापात्र संस्थापना दिवस व्याख्यान के वक्ता के रूप में उपस्थित थे।

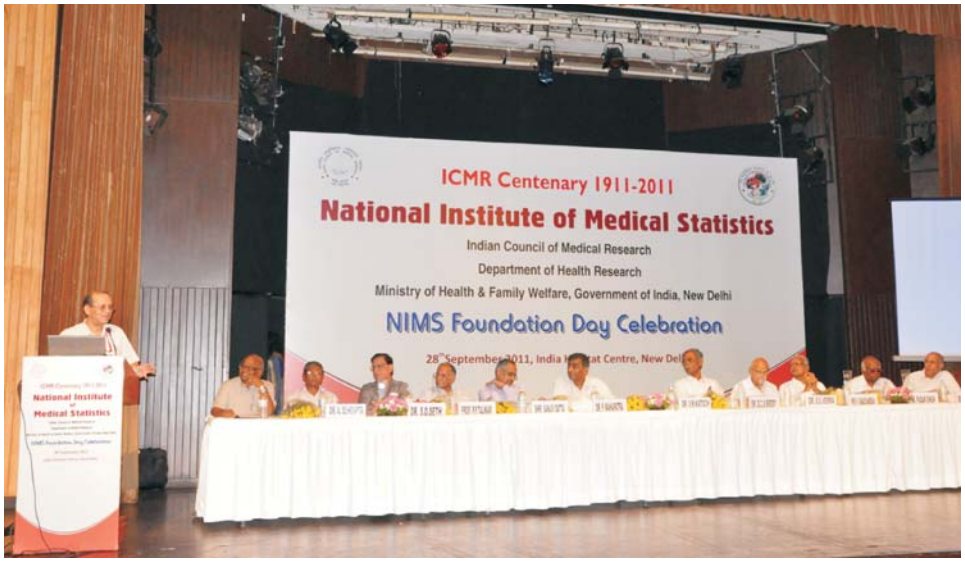

सम्बोधित करते हुए सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर, डॉ विश्व मोहन कटोच

इस अवसर पर राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान के पूर्व निदेशकगण डॉ एस.एस. वर्मा, प्रो.के.रामचन्द्रन और डॉ पदम सिंह भी उपस्थित थे। इनके अलावा राष्ट्रीय जालमा कुष्ठ एवं अन्य माइकोबैक्टीरियल रोग संस्थान, आगरा के पूर्व निदेशक डॉ यू.सेनगुप्ता, क्लीनिकल फार्मेकोलॉजी के पूर्व आई सी एम आर चेयर डॉ एस.डी. सेठ, राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान के सांख्यिकी एवं डेमोग्राफी विभाग के पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष, प्रो.पी.पी. तलवार, परिषद के वित्तीय सलाहकार श्री संजीव दत्ता, वरिष्ठ उपमहानिदेशक (प्रशासन) श्री अरुण बरोका, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ आर.सी. डेका के साथ-साथ परिषद मुख्यालय के अन्य प्रभागों के प्रमुख डॉ बेला शाह एवं डॉ रश्मि अरोड़ा जैसे अतिथिगण भी इस समारोह में उपस्थित हुए। परिषद मुख्यालय एवं आई सी एम आर के दिल्ली स्थित अन्य संस्थानों के अनेक वैज्ञानिकों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत में राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान के निदेशक प्रो. अरविन्द पाण्डेय ने मंचासीन डॉ कटोच, डॉ रेड्डी, डॉ महापात्रा, डॉ पद्म सिंह, डॉ तलवार, डॉ सेठ, डॉ सेनगुप्ता, डॉ वर्मा, प्रो.रामचन्द्रन, श्री दत्ता को बुके प्रदान कर स्वागत करते हुए स्मृतिचिन्ह प्रदान किए। डॉ पाण्डेय ने उपस्थित अन्य सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए विगत 33 वर्षों के दौरान संस्थान की उपलब्धियों एवं गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण दिया।

प्रो. रेड्डी ने अपने व्याख्यान में स्वास्थ्य प्रणाली अनुसंधान में राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान के योगदान के विषय में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस संस्थान ने देश में एच आई वी संक्रमण का प्रवृत्ति एवं रोगभार के साथ-साथ एच आई वी/एड्स से संबद्ध अन्य कार्यक्रमों पर तथ्यपरक सूचना प्रदान करते हुए भारत सरकार के राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय तथा अन्य विभागों के अन्तर्गत बृहत सैम्पल सर्वेक्षणों को तकनीकी सहायता प्रदान करने तथा अनेक राष्ट्रीय कार्यक्रमों के मूल्यांकन में इस संस्थान की भूमिका का भी उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि क्लीनिकल ट्रायल रजिस्ट्री की स्थापना इस संस्थान की एक अन्य उपलब्धि है।

डॉ महापात्र ने अपने संस्थापना दिवस व्याख्यान में बल दिया कि देश में सीमित संसाधनों को ध्यान में रखते हुए केस-कंट्रोल अध्ययन समय की मांग हैं। विश्वस्त आकलन के लिए अध्ययन की रूपरेखा उत्कृष्ट होनी चाहिए और इसके लिए राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान जैसे संगठन की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। सांख्यिकीविद् को जानपदिकरोगविज्ञान के क्षेत्र में पर्याप्त प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि केस कंट्रोल अध्ययनों से सापेक्ष खतरों का सटीक आकलन किया जा सकता है बशर्ते कंट्रोल वर्ग का उपयुक्त चयन किया जाए। उन्होंने अपने व्याख्यान में इस संस्थान की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की प्रशंसा की।

डॉ कटोच ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान के योगदानों की प्रशंसा की। उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि वे सत्यनिष्ठा के साथ अपना सर्वोत्तम योगदान देने का पूर्ण प्रयास करें। इस अवसर पर डॉ कटोच ने संस्थान द्वारा प्रकाशित न्यूज़ लेटर के विशेष अंक का विमोचन भी किया।

धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के पुरस्कार

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा वर्ष 2007 और 2008 के लिए विभिन्न भारतीय वैज्ञानिकों को जैवआयुर्विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में उनके उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए निम्नलिखित पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया है :

जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान में उत्कृष्टता हेतु डॉ बी.आर.अम्बेडकर शताब्दी पुरस्कार 2007- 2008

डॉ शिव कुमार सरीन
निदेशक
यकृत एवं बिलियरी साइंसेज़ संस्थान
नई दिल्ली

वर्ष 2007 के लिए पुरस्कार

तंत्रिकाविज्ञान में अनुसंधान हेतु अमृत मोदी यूनिकेम पुरस्कार, 2007

प्रो सुनील प्रधान
प्रोफेसर, तंत्रिकाविज्ञान विभाग
संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान
लखनऊ
: पेशीय अपविकास

बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार, 2007

डॉ दीपक कुमार भसीन
प्रोफेसर
स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान
चण्डीगढ़
: एण्डोस्कोपिक ट्रांसपैपिलरी ड्रेनेज द्वारा बहु एवं बृहत् स्यूडोसिस्ट्स का चिकित्सा प्रबंध

महिला वैज्ञानिकों के लिए आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार, 2007

डॉ राज मेहरा
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
माइक्रोएनाटॉमी प्रभाग
शरीररचनाविज्ञान विभाग
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान
नई दिल्ली
: एस्ट्रोजन के तंत्रिका संरक्षी प्रभावों के मूल में प्रक्रिया

अल्पविकसित क्षेत्रों में जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार, 2007

डॉ जगदीश महन्ता
निदेशक
क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, पूर्वोत्तर क्षेत्र
डिब्रूगढ़
: भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में संपन्न जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान

भेषजगुणविज्ञान के क्षेत्र में अनुंसंधान हेतु डॉ डी.एन.प्रसाद स्मारक व्याख्यान पुरस्कार, 2007

डॉ चण्डीश्वर नाथ
वैज्ञानिक 'जी' एवं अध्यक्ष
विषविज्ञान प्रभाग, केन्द्रीय औषध अनुसंधान केन्द्र
लखनऊ
: ज्ञान और स्मृति पर तंत्रिका भेषजगुणविज्ञानी अध्ययन : स्मृति विकारों हेतु औषध की खोज

एवं

डॉ मिताली चटर्जी
भेषजगुणविज्ञान विभाग
स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान
कोलकाता
: भारतीय लीशमैनियता हेतु नवीन रसायनचिकित्सीय विधियों का विकास

मलेरिया, फाइलेरिया रोग, प्लेग अथवा आयुर्विज्ञानी कीटविज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान हेतु डॉ एम ओ टी अयंगर स्मारक पुरस्कार, 2007

डॉ बी. के. त्यागी
वैज्ञानिक 'जी' एवं प्रभारी निदेशक
आयुर्विज्ञान कीटविज्ञानी अनुसंधान केन्द्र
मदुरई
: आयुर्विज्ञानी कीटविज्ञान

मौलिक और/अथवा चिकित्सीय कौशिकी और/अथवा निवारक अर्बुदविज्ञान में अनुसंधान हेतु डॉ प्रेम नाथ वाही पुरस्कार, 2007

डॉ कुमारावेल सोमसुन्दरम : अबुर्दविज्ञान में मौलिक अनुसंधान
सह आचार्य
सूक्ष्मजीवविज्ञान एवं कोशिका जैविकी प्रभाग
भारतीय विज्ञान संस्थान
बंगलौर
एवं
डॉ शर्मिला अवधूत बापत : डिम्बग्रंथि कैंसर मूल कोशिका जैविकी में समकलनात्मक प्रयास
नेशनल सेंटर फॉर सेल साइंसेज़
पुणे

प्रजनन जैविकी में अनुसंधान हेतु आई सी एम आर श्रीमती स्वर्ण कान्ता डिंगले व्याख्यान पुरस्कार - 2007

डॉ गीतांजलि सचदेवा : प्राइमेट्स में एण्डोमीट्रियल रिसेप्टिविटी के एक कांटीन्यूम का आरोपण
वैज्ञानिक 'डी'
प्राइमेट जैविकी विभाग
राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान
मुम्बई

40 वर्ष से कम आयु के युवा वैज्ञानिकों के लिए पुरस्कार

शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार, 2007

डॉ आदित्य भूषण पन्त : तंत्रिकाह्रासी विकारों की हेतुकी : 4- हाइड्रॉक्सीनोनल प्रेरित विषविज्ञानी परिणाम और इसका चयापचय
वैज्ञानिक, इन विट्रो विषविज्ञान प्रयोगशाला
भारतीय विषविज्ञान अनुसंधान संस्थान
लखनऊ

मनोवैज्ञानिक चिकित्साविज्ञान में अनुसंधान हेतु आई सी एम आर तिलक वेंकोबा राव पुरस्कार, 2007

डॉ संदीप ग्रोवर : रोगियों और सुरक्षा प्रदाताओं पर मनश्चिकित्सीय विकारों के प्रभाव
सहायक आचार्य
मनश्चिकित्सा विभाग
स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान
चण्डीगढ़
एवं
डॉ ओम प्रकाश : जराविद्या मनश्चिकित्सीय विकारों में चिकित्सीय अनुसंधान
सह आचार्य, मनाश्चिकित्सा तथा
परामर्शदाता, वयस्क एवं वयोवृद्धि मनश्चिकित्सा
मनश्चिकित्सा विभाग, मानव व्यवहार एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान
दिल्ली

वर्ष 2008 के लिए पुरस्कार

हृद्विज्ञान में अनुसंधान हेत अमृत मोदी यूनिकेम पुरस्कार, 2008

डॉ के. शिवकुमार : हृद्पेशीय विकृतिशरीरक्रियाविज्ञान में हृद् फाइब्रोब्लास्ट्स
कोशिकीय एवं आण्विक हृद्विज्ञान प्रभाग
श्री चित्रा तिरुनल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान
तिरुवनंतपुरम

बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार, 2008

डॉ सी. वी. हरिनारायण : भारत में स्थानिक कंकाली फ्लोरोसिस
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
अंतःस्रावीविज्ञान एवं चयापचय विभाग
श्री वेंकटेश्वरा आयुर्विज्ञान संस्थान, तिरुपति
एवं

डॉ मनमोहन परीदा
वैज्ञानिक 'ई' एवं उपनिदेशक
विषाणुविज्ञान प्रभाग
सैन्य शोध एवं विकास प्रतिष्ठान
डी आर डी ओ
ग्वालियर
: उभरते एवं पुनः उभरते विषाणुओं की पहचान और विशेषता

महिला वैज्ञानिकों हेतु आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार, 2008

डॉ स्नेहशिक्ता स्वर्णकार
भारतीय रसायन जैविकी संस्थान
कोलकाता
एवं
: शोथज रोगों के उत्पन्न होने में मैट्रिक्स मेटैलोप्रोटीनेज़ेज

डॉ सौम्या स्वामीनाथन
वैज्ञानिक 'जी'
चिकित्सीय अनुसंधान विभाग
राष्ट्रीय क्षयरोग अनुसंधान संस्थान
चेन्नई
: एच आई वी/क्षयरोग : जानपदिक रोगविज्ञान, विकृतिविज्ञान एवं चिकित्सा प्रबंध

अल्पसुविधाप्राप्त समुदायों के वैज्ञानिकों के लिए जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार, 2008

डॉ सुब्बैया पूपति
वैज्ञानिक 'ई'
रोगवाहक नियंत्रण अनुसंधान केन्द्र
पुडुचेरी
: जैवनाशकजीवनाशी के उत्पादन हेतु नवीन किण्वन प्रौद्योगिकी पर खोज

अल्पविकसित क्षेत्रों में जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार, 2008

डॉ गजेन्द्र कुमार मेधी
वैज्ञानिक 'सी'
क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, पूर्वोत्तर क्षेत्र
डिब्रूगढ़
: असम के चाय बागान मज़दूरों में रुग्णता प्रोफाइल और स्वास्थ्य समस्या के आयाम

कुष्ठरोग एवं अन्य माइकोबैक्टीरियल रोगों में अनुसंधान हेतु जालमा न्यास निधि व्याख्यान पुरस्कार, 2008

डॉ उमेश दत्त गुप्ता
वैज्ञानिक 'ई'
प्रायोगिक जन्तु सुविधा
राष्ट्रीय जालमा कुष्ठ एवं अन्य माइकोबैक्टीरियल रोग संस्थान
आगरा
: नवीन कैण्डीडेट क्षयरोग वैक्सीन के परीक्षण हेतु मूषक और गिनी पिग मॉडेल

चिकित्सीय अनुसंधान हेतु डॉ कुन्ती देवी एवं डॉ ओम प्रकाश व्याख्यान पुरस्कार, 2008

डॉ कंजक्षा घोष
निदेशक
राष्ट्रीय प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान संस्थान
मुम्बई
: भारत में जन्मजात स्कंदन विकारों की जैविकी, चिकित्सा प्रबंध एवं निवारण

सामुदायिक चिकित्सा में व्यवहार हेतु डॉ एम.के.शेशाद्री पुरस्कार, 2008

डॉ आनन्द कृष्णन
सह आचार्य
सामुदायिक चिकित्साविज्ञान केन्द्र
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान
नई दिल्ली
: असंचारी रोग निवारण एवं नियंत्रणः शोध को व्यवहार में परिवर्तित करना

जन स्वास्थ्य में अनुसंधान हेतु डॉ पी.एन. राजू व्याख्यान पुरस्कार, 2008

डॉ असीम साहा
वैज्ञानिक 'सी'
राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान
अहमदाबाद

: मानव स्वास्थ्य पर परिवेश (भीतरी एवं व्यावसायिक) का प्रभाव

सूक्ष्मजीवविज्ञान में अनुसंधान हेतु डॉ वाई.एस. नारायण राव व्याख्यान पुरस्कार, 2008

डॉ गगन दीप कांग
प्रोफेसर, सूक्ष्मजीवविज्ञान
दि वेलकम ट्रस्ट रिसर्च लेबोरेटरी
जठरांत्ररोगविज्ञान विभाग
क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज
वेल्लोर

: रोगजनकता को समझने हेतु आंत्र रोगजनों की विशेषता ज्ञात करना

त्वचाविज्ञान एवं यौन संचारित रोगों में अनुसंधान हेतु आई सी एम आर लाला राम चन्द कंधारी पुरस्कार, 2008

डॉ मंजू बाला
परामर्शदाता (सूक्ष्मजीवविज्ञान) एवं सह आचार्य
क्षेत्रीय एस टी डी शिक्षण, प्रशिक्षण एवं शोध केन्द्र
वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज एवं सफदरजंग अस्पताल
नई दिल्ली

: *नीसेरिया गोनोरियाई* में सूक्ष्मजीवीरोधी प्रतिरोध की निगरानी: गोनोरिया के चिकित्सा प्रबंध हेतु भावी प्रभाव

चिकित्साविज्ञान के व्यवहार हेतु आई सी एम आर एम.एन.सेन व्याख्यान पुरस्कार, 2008

डॉ मण्डलम सुब्रामणियन शेशाद्री
प्रोफेसर, मेडिसिन एवं अध्यक्ष
अंतःस्रावीविज्ञान विभाग
क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज
वेल्लोर

: दक्षिण भारत में अस्थिसुषिरता और अस्थि चयापचय

कैंसर के क्षेत्र में अनुसंधान हेतु नोवार्तिस व्याख्यान पुरस्कार, 2008

डॉ चित्रा सरकार (नी चौधरी)
आचार्य
विकृतिविज्ञान विभाग
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान
नई दिल्ली

: मस्तिष्क के दुर्दम ग्लायोमा में आण्विक आनुवंशिक परिवर्तन : नैदानिक एवं पूर्वानुमानिक महत्व

उष्णकटिबंधीय रोगों में अनुसंधान हेतु प्रोफेसर बी.के.ऐकत व्याख्यान पुरस्कार, 2008

प्रो. सरमन सिंह
आचार्य
लेबोरेटरी मेडिसिन विभाग
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान
नई दिल्ली

: अंतरांग लीशमैनियता के लिए एक नवीन नैदानिक विधि का विकास

जराविद्या में अनुसंधान हेतु प्रोफेसर सुरिन्दर मोहन मरवाह पुरस्कार, 2008

डॉ के. एस. शाजी
आचार्य, मनश्चिकित्सा
राजकीय मेडिकल कॉलेज
त्रिसूर

: भारत में मनोभ्रंश पर शोध

40 वर्ष से कम आयु के युवा वैज्ञानिकों हेतु पुरस्कार

शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार, 2008

डॉ डी. श्रीराम : क्षयरोग औषध खोज
सह आचार्य, फार्मेसी ग्रुप
बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ऐण्ड साइंस
हैदराबाद कैम्पस
हैदराबाद

प्रजनन जैविकी में अनुसंधान हेतु आई सी एम आर तिलक वेंकोबा राव पुरस्कार, 2008

डॉ सुरेश येनुगू : पुरुष प्रजनन पथ सूक्ष्मजीवीरोधी पेप्टाइड्स
व्याख्याता
जन्तुविज्ञान विभाग
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदराबाद

संचारी रोगों में अनुसंधान हेतु मेजर जनरल साहेब सिंह सोखे पुरस्कार, 2008

डॉ सितारा स्वर्ण राव अज्जमपुर : क्रिप्टोस्पोरिडिओसिस और जियार्डियारुग्णता : दक्षिण भारत में बच्चों में आण्विक जानपदिक रोगविज्ञान
सहायक आचार्य
जठरांत्ररोगविज्ञान विभाग
क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज
वेल्लोर

परिषद के समाचार

परिषद के विभिन्न तकनीकी दलों/समितियों की नई दिल्ली में सम्पन्न बैठकें :

मुखीय स्वास्थ्य के क्षेत्र में परियोजना पुनरीक्षण समिति	26 अगस्त, 2011
जठरान्त्ररोगविज्ञान के क्षेत्र में परियोजना पुनरीक्षण समिति	26 अगस्त, 2011
स्टेन्ट के स्वदेशी उत्पादन पर विशेषज्ञ दल की बैठक	30 अगस्त, 2011
बायोमेडिकल रिसर्च बोर्ड की बैठक	30 अगस्त, 2011
भारत में असंचारी रोगों के हल के लिए वर्तमान में उपलब्ध स्वास्थ्य प्रणाली को सुदृढ़ बनाने के लिए एक मॉडेल के विकास पर विशेषज्ञ बैठक	1 सितम्बर, 2011
कैंडीडेट जीन की सम्बद्धता पर टास्क फोर्स की बैठक	6 सितम्बर, 2011
मानव आनुवंशिकी पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	9 सितम्बर, 2011
सोलर पावर्ड कल्चर इन्क्युबेटर तथा सोलर बेबी वार्मर के फैब्रीकेशन पर विशेषज्ञ दल की बैठक	12 सितम्बर, 2011
मानव संसाधन विकास में सलाहकार दल की बैठक	16 सितम्बर, 2011
जनजातीय स्वास्थ्य पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	20 सितम्बर, 2011
बालकालीन एवं नवजात शिशु रोग के समन्वित प्रबन्धन के प्रभाव का मूल्यांकन : तकनीकी सलाहकार दल बैठक परियोजना	21 सितम्बर, 2011
अर्बुदविज्ञान पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	22-23 सितम्बर, 2011
स्वास्थ्य सेवा वितरण एवं उपयोग, लिंग सम्बद्ध पहलू एवं प्रजनन स्वास्थ्य तथा जीवन शैली सम्बद्ध रोगों पर परियोजना पुनरीक्षण दल की बैठक	23 सितम्बर, 2011

राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में परिषद के वैज्ञानिकों की भागीदारी

हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ कलपगम पोलासा ने खाद्य सुरक्षा में प्रयोगशाला विशेषज्ञ के रूप में थिम्पू, भूटान में डब्ल्यू एच ओ प्रायोजित नियुक्ति (एसाइन्मेन्ट) को ग्रहण किया (29 अगस्त से 29 सितम्बर, 2011) ।

नोएडा स्थित कौशिकी तथा निवारक अर्बुदशास्त्र संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ ए.सी. भारती ने बर्लिन, जर्मनी में सम्पन्न 27वें अंतर्राष्ट्रीय पैपिलोमाविषाणु सम्मेलन में भाग लिया (17-22 सितम्बर, 2011) ।

बेलगांव स्थित क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक 'सी' डॉ राजेश कुमार जोशी ने यूनाइटेड किंगडम में सम्पन्न GC/MS इंस्ट्रूमेन्ट प्रशिक्षण में भाग लिया (20-23 सितम्बर, 2011) ।

परिषद की वित्तीय सहायता से संपन्न एवं भावी संगोष्ठियां/से र/कार्यशालाएं/पाठ्यक्र

संगोष्ठियां/ सेमिनार/कार्यशालाएं/ पाठ्यक्रम/ सम्मेलन	दिनांक एवं स्थान	सम्पर्क के लिए पता
अंतर्राष्ट्रीय सेरेब्रोवैस्कुलर सी एम ई, लाइव न्युरोसर्जरी/न्युरोइंटरवेंशनल कार्यशाला तथा का 11वां वार्षिक सम्मेलन		
शल्यक्रिया में वर्तमान दिशाओं पर सर्जरी-	8-9 अक्टू र, 2011 पुण	आर्म्ड फोर्सेज़ मेडिकल कॉलेज एवं कमाण्ड अस्पताल, पुणे
रोगवाहक और रोगवाहकजन्य रोगों पर	15-17 अक्टू र, 2011 ज लपुर	निदेशक क्षेत्रीय जनजातीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र ज लपुर
मानव कल्याण में जैवप्रौद्योगिकी की भूमिका	27-29 अक्टू र, 2011	आचार्य स्कूल ऑफ ायोटेक्नौलॉजी देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
का 52वां वार्षिक सम्मेलन तथा सतत हेतु माइक्रो ियल जैवप्रौद्योगिकी पर	चण्डीगढ़	माइक्रो ायोलॉजी विभाग
फाइटोपोटेंशियल्स का रसायनविज्ञान : स्वार		